

niss kommen; mit acc.: तृप्तिम् MĀRK. P. 31, 8. विलोकनीयताम् KĀTHĀS. 45. — Vgl. उपायात्.

— अयुया *hinzukommen, herankommen* KĀTHĀS. 18, 132.

— समुया *dass.: तत्रैव समुपायौ* KĀTHĀS. 12, 102, 17, 159. *विराट्* gehen zu MBH. 4, 280. वसन्ते समुपायाते *gekommen* Spr. 623.

— पर्या *herkommen von* (abl.) RV. 8, 8, 3. आ नो याते दिवस्परि 4. आ याक्ष्यं आ परि स्वाका सोमस्य पीतये 34, 10.

— अनुपर्या, so ĀCV. GṚHJ. 3, 12, 15 bei STENZLER; s. jedoch u. अनुपरि.

— प्रा *herbeikommen: तमा प्र याक्वि* RV. 7, 24, 1. आ तु प्र याक्वि 29, 1. 3, 30, 2. 8, 2, 19.

— उपप्रा *dass.: उप प्र याते वरमा वसिष्ठम्* RV. 7, 70, 6.

— प्रतिप्रा *dass.: प्रति प्र याते वरमा जनान्य* RV. 7, 70, 5.

— प्रत्या *zurückkommen, zurückkehren* MBH. 4, 1698. RĀGA-TAR. 6, 205. आश्रमम् RAGH. 2, 67. KĀTHĀS. 13, 194. 53, 22.

— समा 1) *zusammen herbeikommen, zusammenkommen, hinzukommen, herantreten, kommen, kommen nach, zu: लोकपाला महेन्द्राद्याः समायाति* (सभो या^० ed. Calc.) दिदृक्षवः MBH. 3, 2139 (N. 3, 5). R. 1, 39, 11. 2, 91, 14. 4, 37, 23. MĀRK. P. 109, 37. 128, 27. LA. (III) 91, 1. चत्वारो वराः समायाताः 13, 1. द्वा पन्थानि समायाति PĀNĪKĀT. 243, 2. समायात् MBH. 4, 1107. R. GORR. 2, 33, 6. समायाते काले Spr. 3178. KĀTHĀS. 104, 50. RĀGA-TAR. 6, 246. PĀNĪKĀT. 34, 17. 46, 6. HIT. 14, 22. कस्त्वं कुतः समायातः 40, 21. 83, 2. VER. in LA. (III) 7, 11. 9, 13. Verz. d. Oxf. H. 14, b, 40. कृत्वा नन्दस्य मन्त्रिताम् । खिन्नः समायायौ ऋष्टुं कदाचिद्विन्द्यवासिनीम् *er ging* KĀTHĀS. 2, 2. वृक्षयः सर्व एवैते स्वं स्वं सन्न समायायुः HARIV. 14494. R. 2, 71, 10. Verz. d. Oxf. H. 149, a, 29. तमुद्देशं समायातः *gekommen* PĀNĪKĀT. 199, 2. वत्सराजस्य पार्थम् KĀTHĀS. 14, 1. निकटं तस्य 43, 279. समायास्यति ते ऽत्तिकम् MBH. 12, 7213. MĀRK. P. S. 636, Z. 12. अत्र समायायौ KĀTHĀS. 34, 144. HIT. 27, 14. VER. in LA. (III) 3, 22. कुतो ऽपि स्यान्नात् — राजसभायां समायातः 2, 3. तस्मिंस्तडागे 5, 16. ताम् *ging auf sie zu* KĀTHĀS. 9, 62. कालमेघः समायायौ *zog auf* 52, 323. शक्तिं समायासीत् *herangeflogen kommend* MBH. 5, 7206. समायाति सदा लक्ष्मीर्नारिकेलफलाम्बुवत् Spr. 3177. तिलपुष्पात्समायाति वायुः 1034. अस्या इष्टा दशा समायाता *kam über sie* Z. d. d. m. G. 14, 374, 3. मम वलान्निद्रा समायाता PĀNĪKĀT. 27, 10. यावत्कृत्वापतः समायाति VER. in LA. (III) 8, 3. शशकस्यावसरः समायातः PĀNĪKĀT. 53, 4. — 2) *verstreichen, verfließen: मासा दश समायायुः* MBH. 4, 373. — 3) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen; mit acc.: वृद्धिम्* Spr. 3237. MĀRK. P. 23, 13. सौहित्यम् RĀGA-TAR. 4, 625.

— अभिसमा *zusammen herbeikommen* MBH. 5, 1974.

— उद् 1) *hinausgehen, weggehen: स्थानात्* ÇAT. BR. 14, 5, 4, 1. *abfliegen: क्रमशस्ते* (शराः) पुनस्तस्य चापात्सामिवोद्ययुः RAGH. 12, 47. — 2) *sich erheben: पतत्युद्याति* GĪT. 4, 19. खम् KĀTHĀS. 26, 231. दिवम् 28, 92. 107, 39. — 3) *sich erheben* so v. a. *entstehen: विरोधि ऽन्योऽन्यमुद्ययो* RĀGA-TAR. 4, 687. इति मतिरुदासीत् NAISH. 2, 109. — 4) *übertreffen: तामुद्यातितराम्* MĀRK. P. 69, 60. — Vgl. उद्यान. — caus. 5. उद्यापन.

— अयुद् *sich gegen Jmd erheben* MBH. 6, 5217. अयुद्यतो st. अयुद्यातो ed. Bomb.

VI. Theil.

— प्रत्युद् *sich erheben und Jmd (acc.) entgegen gehen* (in freundlicher oder feindlicher Absicht) MBH. 4, 1666. 1834. 2185. 2187. 3, 2255. 6, 1690. 2892. 14, 176. 2106. 2222. 16, 129. R. GORR. 1, 21, 7 (20, 8 SCHL.). 2, 46, 20. KUMĀRAS. 6, 50. KĀTHĀS. 16, 73. 121, 271. RĀGA-TAR. 3, 226. BHĪG. P. 1, 11, 3. प्रत्युद्यात् mit pass. Bed. RAGH. 1, 49. MEGH. 23. auch mit gen. der Person: प्रोष्यागच्छतामाहिताग्नीनामग्नयः प्रत्युद्याति ved. Cit. bei MALLIN. zu RAGH. 1, 49. — Vgl. प्रत्युद्यातर.

— समुद् *sich gegen Jmd (acc.) erheben* MBH. 8, 1316. यच्च नः संहिता-न्सर्वान्विराटनगरे तदा । एक एव समुद्यातः 6, 4456.

— उप 1) *herbeikommen, besuchen, hingehen —, kommen nach, zu, sich Jmd nähern: यमश्ची नित्यमुपयाति यज्ञम्* RV. 7, 1, 12. 28, 1. TBH. 3, 1, 2, 4. चन्द्रो याति सभामुपे RV. 8, 4, 9. ज्ञायाम् 1, 82, 5. बर्हिः 133, 1. युक्ता रथमुपे देवां अयातन 161, 7. स्तोमम् 3, 60, 7. इक्ष्वापे यात 4, 33, 1. निष्कृतम् 9, 86, 32. AV. 13, 2, 37. 18, 4, 8. संसदम् ĀCV. GṚHJ. 2, 6, 11. GOBU. 3, 4, 28. — 2) *रथं गृहीत्वोपयौ* R. 2, 82, 27. स्पन्दनेनोपयान् R. GORR. 2, 123, 1. 4, 37, 37. GĪT. 9, 8. BHĪG. P. 3, 31, 40. कस्मान्निक्षेपायातो ऽसि R. 2, 91, 5. 6. 5, 27, 13. R. GORR. 1, 73, 6. 2, 100, 6. 3, 42, 31. MBH. 3, 11903. KĀTHĀS. 52, 231. 53, 142. BHĪG. P. 1, 19, 15 (um Schutz zu suchen). 3, 31, 20. यत्रोपयाति हरिभिः सोमवीथीम् MBH. 13, 4896. उत्तमां गतिम् KĀTHĀS. 111. 72. स्वपुरम् MBH. 2, 49. 3, 618. 637. 2764. 3, 7106. 7486 (wo नोपयाति mit der ed. Bomb. zu lesen ist). तदर्थमुपयातो ऽहमयोद्याम् R. 1, 73, 4. 2, 80, 15. 37, 16. 71, 9. 5, 63, 13. RĪT. 1, 23. BHĪG. P. 3, 21, 37. 4, 30, 18. 5, 21, 10. दिवमुपयातानाम् Spr. 1137. अस्तम् KĀTHĀS. 30, 144. सकाशम् BHĪG. P. 3, 16, 26. औत्रपदवीम् Verz. d. Oxf. H. 38, b, 4. सवितरि कषमुपयाते VARĀH. BRH. S. 42, 12. उपचयभवनोपयातस्य भानोः 104, 61. गृहोपयात BHĪG. P. 4, 20, 15. (नदी) अर्चिता चोपयाता (besucht) च गन्धर्वैः MBH. 3, 10903. उपयात्यर्चयित्वा तु वाम् 172, 4, 1149. 7, 6406. अहं तु तं नरव्याघ्रमुपयातः प्रसादकः R. 2, 90, 17. 4, 33, 31. Spr. 2300. KĀTHĀS. 84, 25. BHĪG. P. 1, 2, 3. 3, 16, 20. 5, 14, 40. तामेव शरणां नित्यमुपयास्ये HARIV. 2918. 12330. पुरुषं पुराणं ब्रह्म प्रधानमुपयाति *eingehen in* BHĪG. P. 3, 32, 10. मधुः (= वसन्तः) उपयौ RAGH. ed. Calc. 9, 24. शरय्योपयातायाम् R. 4, 29, 1. जरां प्रशान्तिद्वतीमुपयाताम् KĀTHĀS. 10, 216. दुर्मन्त्रिणं कमुपयाति न नीतिदोषाः so v. a. *begegnen* Spr. 1193. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaftig werden, erlangen, finden: मृत्युम्* VARĀH. BRH. S. 69, 30. अमी घना वायुवशोपयाताः HARIV. 8783. मुद्म् Spr. 3329. रुजम् GĪT. 5, 4. आस्रभावम् Spr. 1322 (= MBH. 1, 654). तोभम् MBH. 1, 7634. नाशम् MĀRK. P. 49, 25. विनाशम् R. 2, 48, 22. R. GORR. 2, 69, 7. VARĀH. BRH. S. 17, 21. 34, 61. पाकम् R. 12, 46, 7. 51. शमम् 5, 62. मोक्षम् 7, 19. प्रकोपम् 38, 3. संतापम् 47, 14. विपादम् Spr. 1202. प्रसादम् PRAB. 68, 12. प्रकाशम् HARIV. 5224. मूर्काम् BHĪG. P. 5, 26, 8. पीडाम् VARĀH. BRH. S. 3, 35. वृद्धिम् 23, 2. अतिम् MBH. 1, 7634. व्यतिम् HARIV. 6497. पुष्टिम् MĀRK. P. 16, 71. यो यो सृष्टिम् BHĪG. P. 1, 19, 16. भूतिं चोपयौ तस्य सारथ्येन महीपतेः MBH. 3, 2296. भार्यात्वम् M. 12, 69. स्थिरत्वम् Spr. 1322. तनुताम् RAGH. 9, 37. मुञ्जताम् Spr. 2031. मृडत्वम् MĀRK. P. 68, 32. एकत्वम् 102, 10. ब्रह्मवाट्यप्रिसोमानो सालोक्यम् MBH. 13, 4173. काठिन्यम् VARĀH. BRH. S. 21, 34. माधुर्यम् Spr. 4966. तस्य साहाय्यम् KĀTHĀS. 32, 35. क्व शरणमुपयाति तत्र जनाः VARĀH. BRH. S. 5, 88. कश्मलम् BHĪG. P. 5, 13, 7. किञ्चिदनम् 14, 35. सान्नादन्धैरपकृतमपि प्रीतिमेवो-